विचार बिन्दु

दोष पराये देखकर चालत हसंत-हसंत,
अपने याद ना आवई जिनका आदि ना अंत। –कबीर

एक-दूसरे के पूरक हैं सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष!

यह बात अनेक बार कही जा चुकी है संसद की एक मिनिट की कार्यवाही पर कितना पैसा खर्च होता है! जितना पैसा संसद की कार्यवाही पर खर्च होता है, उतना तो नहीं लेकिन उससे कम राज्यों की विधानसभाओं की कार्यवाही पर भी खर्च होता है। कहने की ज़रूरत नहीं, लेकिन कहना भी है कि यह सारा पैसा जनता की अर्थात आपकी-हमारी जेब से जाता है। और जब हम पैसा खर्च कर रहे हैं तो हमारी यह अपेक्षा भी अनुचित नहीं कही-मानी जानी चाहिए कि इस पैसे का सदुपयोग हो!

संसद या विधानसभाओं, जिन्हें संयुक्त रूप से विधायिका कहा जाता है, का मुख्य काम है शासन चलाने के लिए नीतियां बनाना, और यह देखना कि वे नीतियां ठीक से क्रियान्वित हो रही हैं या नहीं! सत्ता पक्ष नीतियां तय करता है और उन्हें बनाता व लागू करता है तथा प्रति पक्ष इस बात का ध्यान रखने की कोशिश करता है कि यह सब न्यायसंगत तरीके से हो रहा है या नहीं! असल में तो सत्ता पक्ष व प्रति पक्ष एक-दूसरे के शत्रु नहीं, पूरक हैं। एक के अधूरे काम की तरफ दूसरा ध्यान आकर्षित करता है। अगर सत्ता पक्ष इस बात पर इतराता है कि उसे जनता ने चुना है तो उसे इस बात को भी याद रखना चाहिए कि प्रति पक्ष को भी उसी जनता ने चुना है। एक-दूसरे के प्रति सद्भाव और सहयोग रखकर ही दोनों अपनी-अपनी भूमिका का सही निर्वहन कर सकते हैं।

देखने की बात यह है कि क्या सच में ऐसा हो पा रहा है? लगभग हर जगह, मतलब संसद के दोनों सदनों और राज्यों की अधिकांश विधानसभाओं में, सदनों का ज़्यादा समय हंगामों की भेंट चढ़ जाने लगा है। यह प्रवृत्ति पहले कम थी, इधर बहुत बढ़ गई है। सत्ता पक्ष का आरोप होता है कि प्रति पक्ष सदन की कार्र्वाई नहीं चलने दे रहा है जबकि प्रति पक्ष कहता है कि उसे अपनी बात कहने के अधिकार से वंचित रखा जा रहा है। अगर वह अपनी बात ही न कह सके तो उसके होने का औचित्य क्या है? दोनों के बीच बहुत बार तो टकराव व्यवस्थागत मुद्दों को लेकर होते हैं और बहुत बार एक-दूसरे के व्यवहार और सोच को लेकर होते हैं। सत्ता पक्ष अपनी कोई आलोचना नहीं सुनना चाहता है, उसे सुनकर उसका जवाब देना तो बहुत दूर की बात है। और इसी तरह प्रति पक्ष सत्ता पक्ष के सकारात्मक पहलू को सिरे से खारिज़ करने लगता है। बात केवल यहीं तक सीमित नहीं रह जाती है। भाषा और व्यवहार की सारी मर्यादाएं तार-तार होने लगी हैं। एक आम नागरिक यह अपेक्षा करता है कि जिसे उसने चुनकर भेजा है वह सदन में जाकर गरिमापूर्ण और ज़िम्मेदारी भरा व्यवहार करेगा लेकिन बहुत बार उसकी यह अपेक्षा पूरी नहीं होती है। माननीयों का जो बरताव हम अपने टेलीविज़न के पर्दों पर देखते हैं उसे किसी भी तरह माननीयोचित नहीं कहा जा सकता।

एक समय था जब संसद और विधानसभाओं की बहसें हमें बहुत कुछ सिखाती थीं। हमारे निर्वाचित जन प्रतिनिधि पूरी तैयारी के साथ सदन में जाते थे और गरिमा व शालीनतापूर्वक अपनी बात कहते थे। ऐसा नहीं है कि तब किसी तरह की आलोचना नहीं होती थी। बहुत तीखी और ध्वस्त कर देने वाली आलोचना भी होती थी, लेकिन उस आलोचना का भी एक स्तर होता था, जिनकी आलोचना की जाती भी उनमें भी यह उदारता होती थी कि वे उस आलोचना को सुनते और गुनते थे, और अवसर आने पर उसका माकूल जवाब भी देते थे। आलोचना करने वाला भी धैर्य पूर्वक उस जवाब को सुनता था। वह ज़माना सीधे प्रसारण का नहीं था, इसलिए हम तक वह सारा विमर्श मुद्रण माध्यमों के ज़रिये ही पहुंचता था। लेकिन हमें वह बहुत रोचक और शिक्षा देने वाला लगता था। आज जब हम सदनों की कार्यवाही लाइव देखते हैं, कुल मिलाकर प्रतिक्रिया यह होती है कि इसे देखा ही क्यों? चुनाव जीतने पर जिनके प्रति मन में सम्मान का भाव पैदा होता था, उनका व्यवहार देखकर वह सारा सम्मान लुप्त हो जाता है।

एक समय था जब संसद और विधानसभाओं की बहसें हमें बहुत कुछ सिखाती थीं। हमारे निर्वाचित जन प्रतिनिधि पूरी तैयारी के साथ सदन में जाते थे और गरिमा व शालीनतापूर्वक अपनी बात कहते थे। ऐसा नहीं है कि तब किसी तरह की आलोचना नहीं होती थी। बहुत तीखी और ध्वस्त कर देने वाली आलोचना भी होती थी। आलोचना करने वाला भी धैर्य पूर्वक उस जवाब को सुनता था।

जैसा मैंने पहले कहा, जब संसद या विधानसभाओं में हो-हल्ला होता है, प्राय: सत्ता पक्ष यह आरोप लगाता है कि प्रतिपक्ष सदन नहीं चलने दे रहा है। यहां दो बातें विचारणीय हैं। एक तो यह कि सदन की कार्यवाही चले, यह सुनिश्चित करना किसका दायित्व है: सत्ता पक्ष का या प्रति पक्ष का? अगर आप यह जवाब दे रहे हैं कि दोनों का, तो भी यह सवाल अपनी जगह रहेगा कि प्राथमिक दायित्व किसका है? प्रति पक्ष सहयोग करे यह सुनिश्चित करने का दायित्व सत्ता पक्ष का है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। दूसरी बात यह कि भला प्रति पक्ष की इस बात में कोई रुचि क्यों हो सकती है कि सदन न चले? उसका तो सारा हित सदन के चलने में निहित है। सदन चले और प्रति पक्ष अपनी बात कहे, सरकार को कटघरे में खड़ा करे – इससे बेहतर बात उसके लिए क्या हो सकती है? सदन के न चलने से हानि तो प्रति पक्ष की ही है। अब इसी बात को दूसरे कोण से भी देखें। अगर सदन ठीक से चले और प्रति पक्ष अपनी बात कह सके तो ज़ाहिर है कि सरकार की बहुत सारी खामियां सामने आएंगी। सरकार को, आज के माहौल वाली सरकार को, भला यह बात क्यों स्वीकार्य होगी? तो कोशिश तो उसकी होगी कि सदन की कार्यवाही न चले। बहुत बार तो यह भी लगता है कि सत्ता पक्ष प्रति पक्ष की आलोचना से बचने के लिए ख़ुद ऐसी स्थितियां पैदा करता है जिससे सदन में हो हल्ला हो, प्रति पक्ष अपनी बात न कह सके और अव्यवस्था की आड़ लेकर सत्ता पक्ष सदन की कार्यवाही स्थगित कर सके।

असल में हमने पिछले कुछ बरसों में देखा है कि सरकारें, चाहे वे किसी भी दल की क्यों न हों, ज़्यादा से ज़्यादा घमंडी और असहिष्णु होती जा रही हैं। अपने खिलाफ़ कुछ भी सुनना उन्हें रास नहीं आता है। विरोध और असहमति की हर आवाज़ को कुचलना उनके स्वभाव का हिस्सा बन चुका है। यह आकस्मिक नहीं है कि लोकसभा के पिछले सत्र में एक साथ बहुत सारेविपक्षी सांसदों को निष्कासित किया गया। क्या अनुचित व्यवहार केवल प्रति पक्ष के सांसद ही करते रहे हैं? क्या सत्ता पक्ष के एक भी सांसद का व्यवहार ऐसा नहीं रहा होगा कि उस पर भी निष्कासन की कार्यवाही की जाती? क्या यह एक कटु यथार्थ नहीं है कि अब सरकारें किसी भी तरह की, कितनी भी छोटी से छोटी असहमति को सहन करने को तैयार नहीं हैं। ऐसे में सवाल यह भी उठना चाहिए कि फिर चुनाव का और पूरी विधायिका का तामझाम क्यों? जब सत्ता पक्ष को अपनी मनमानी ही करनी है, जब उसे प्रति पक्ष की कोई बात सुननी ही नहीं है तो फिर लोकतंत्र का अर्थ ही क्या रह जाता है?

सत्ता पक्ष प्राय: प्रति पक्ष पर यह आरोप लगाता है कि वह नकारात्मक, विध्वंसात्मक और असहयोगी है। इन आरोपों के आलोक में यह परीक्षण किया जा सकता है कि सत्ता पक्ष प्रति पक्ष से क्या अपेक्षा करता है! सकारात्मक प्रति पक्ष क्या और कैसा हो सकता है? क्या सत्ता पक्ष प्रति पक्ष से भी यह अपेक्षा करता है कि वह सत्ता पक्ष की आवाज़ में आवाज़ मिलाकर बात करेगा? सहयोग से उसका क्या अभिप्राय होता है? ग़ैर विध्वंसात्मक व्यवहार कैसा हो सकता है? क्या यह समझा जाए कि सत्ता पक्ष यह अपेक्षा करता है कि उसका नाम भले ही प्रति पक्ष हो, काम वह सत्ता पक्ष की तरह करे! क्या यह अपेक्षा उचित है? क्या इस तरह कोई स्वस्थ और जीवंत लोकतंत्र सम्भव है?

मुझे बहुत रोचक तो यह लगता है कि सत्ता पक्ष बार-बार प्रति पक्ष से कहता है कि उसे अमुक मुद्दे पर राजनीति नहीं करनी चाहिए! इससे अधिक हास्यास्पद बात और क्या हो सकती है? जो लोग राजनीति करके चुन कर आए हैं, वे अगर राजनीति नहीं करेंगे तो फिर करेंगे क्या? और क्या राजनीति कोई बुरी चीज़ है? सत्ता पक्ष राजनीति न करके कोई अन्य कार्य करता है? भाई, राजनीति में हैं तो राजनीति करेंगे ही। करनी भी चाहिए।

असल में पिछले कुछ बरसों में बहुत नियोजित तरीके से प्रति पक्ष को दबाया, कुचला और अदृश्य किया गया है। सत्ता ने अपने घमंड में यह सोचना ही बंद कर दिया कि वह कुछ ग़लत कर भी सकती है। अगर किसी ने उसके कामों पर सवाल उठाए तो उसने अपनी भाड़े की फौज़ से उनको दबाने के हर मुमकिन प्रयास करके उनके हौसलों को तोड़ा। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं चल सकता। इस बार जैसे देश ने एक करवट ली है और जिस प्रति पक्ष को अनेक प्रयासों से लस्त-पस्त कर दिया था वह फिर से उठ खड़ा हुआ है। यह बात सत्ता पक्ष को पसंद नहीं आ रही है। संसद की इन दिनों की अनेक बातें इस बात की चुगली कर रही है कि सत्ता पक्ष अभी इस बात को पचा नहीं पा रहा है कि कोई उसके खिलाफ़ चूं तक भी करे! सत्ता पक्ष के प्रमुख चेहरों ने जिस भाषा और तेवर के साथ अपनी बात कही है और प्रति पक्ष का उपहास किया है उसने हमारे मुंह का स्वाद बिगाड़ा है।

हम तो एक ऐसे लोकतंत्र की कल्पना करते हैं जिसमें सत्ता पक्ष और प्रति पक्ष दोनों एक-दूसरे के प्रति सम्मान और सद्भावना से परिपूर्ण हों और यह मानकर काम करें कि वे एक-दूसरे के पूरक हैं। यह तभी सम्भव हो सकता है जब सत्ता पक्ष प्रति पक्ष को अपना शत्रु और अपने से कमतर मानना और आंकना बंद करे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

भगवान शिव जगत के प्रथम जीवंत पटकथा रचनाकार

प्रो. वीर बहादुर सिंह

कहते है कि एक बार भगवान शिव मां पार्वती के साथ हिमालय में किसी स्थान पर मौन मुद्रा में आसन लगाए बैठे हुए थे, उनके दिमाग में एक कथा ने जन्म लिया तो समाधि से निवृत होकर माता पार्वती से पूछा कि मेरे दिमाग में एक कहानी उपजी है जो बड़ी रोचक है तुम यदि सुनना चाहो तो सुना सकता हूँ लेकिन सुनने की शर्त एक है कि कहीं भी बीच में संदेह मत करना।

माता के राजी होने पर शिव जी ने कथा आरम्भ की। यह राम कथा थी जो उन्होंने प्रथम बार सुनायी थी, बाद में यही कथा महिर्षि वाल्मीक जी ने रामायण के रूप में काव्यबंद की और फिर महात्मा तुलसीदास ने रामचरित मानस के रूप में। बीच की अवधि में कई रामायणें विभिन्न लोगों ने रची, परन्तु उपरोक्त दो ग्रन्थ ही प्रसिद्धि पा सके। इन पटकथाओं की भिन्नता केवल भाषा की है, वाल्मीक जी ने संस्कृत भाषा और तुलसीदास जी ने हिंदी अवधी का मिश्रण अपनाया, जो कि उनके काल में पूरे उत्तर भारत में बोली जाती थी। कथानक दोनों रचनाओं में लगभग समान ही है। और वही है जो भगवान शिव ने माता पार्वती को सुनाया। यह कथा बहुत ही विलक्षण है।

उपरोक्त वर्णित दोनों काव्य ग्रंथ आज भी बने हुए हैं। इस कथा की विलक्षणता ये है कि भगवान शिव ने कथानक के अनुसार सभी पुरुष और स्त्री पात्रों को भी एक काल में उनके किरदार के अनुसार जमीं पर उतार दिया। यथा-राम, रावण, राजा दशरथ, जनक, कैकय, कौशल्या, सुमित्रा, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, बिभीषन, त्रिजटा, मंदोदरी, सुग्रीव, अंगद, जामवंत, निषादराज, केवट, चित्रकूट, किष्किंधा, स्वंय प्रभा, सूर्पनखा, मारीच, गीधराज-जटायु, सम्पाती, मंथरा इत्यादि अनेक पात्र जो इस पटकथा में शामिल हैं, धरती पर जन्म लिए। कहीं कोई असमंजस अथवा उलटफेर नहीं, भगवान शिव द्वारा देखा गया मानसिक चित्रण हूबहू धरती पर वैसे ही पात्रों ने निभाया जैसा उन्होंने समाधि में देखा और फिर माता को सुनाया। क्या इतना पढ़कर नहीं लगता कि यह कथानक वर्तमान काल के चलचित्रों की भाँति ही जगत के विशाल परदे पर कभी धरती पर घटित हुआ? विचार करके देखिये।

यह कथानक जगत में विभिन्न दृष्टिकोणों से अपनी विशेषताओं के कारण काफी प्रचलित हुआ यहाँ तक कि इसके सुनने मात्र से लोगों के दुःख नष्ट होने लगे। और स्वयं भगवान शिव को सती की मृत्यु पश्चात् असीम विकलता से पार आने के लिए महिर्षि नारद जी ने उन्हें नील पर्वत पर जाकर काकभुसुंडि द्वारा कही जाने वाली कथा सुनने का सुझाव दिया था जिससे भगवान शिव अपनी प्रिय पत्नी के वियोग के दुःख से छूट गए थे। काकभुसुंडि द्वारा कही कथा राम कथा थी। क्या सच है क्या नहीं मेरी बुद्धि से यह परे की चीज है। लेकिन फिर कालान्तर में माता सीता को भी लंका में रावण की कैद में रहते असीम दुःख से इस राम कथा के सुनने से ही विरह संताप से मुक्ति मिली थी। ये कहानी तन बाबा हनुमान जी ने उन्हें एक पेड़ पर बैठ सुनाई थी जिससे माता सीता का विरह दुःख मिट गया था। वर्तमान में भी किसी प्राणी की शव यात्रा में लोग 'राम नाम सत्य है' बोलते हुए शव को शमसान दाह संस्कार के लिए ले जाते हैं। कहने का तात्पर्य ये है कि सनतानिओं में अब राम नाम अथवा कथा पूर्ण या केवल सुन्दर कांड कथा सुनने-सुनाने का काफी प्रचलन हो गया है।

अब एक दूसरा पक्ष कि सनतानिओं के तीन भगवान यथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश प्रमुख रूप से कहे जाते हैं। ब्रह्मा जी जीवों की उत्पति करने वाले अथवा प्राणिओ के जनक माने जाते हैं जबकि विष्णु जी पालन हार और महेश या शिव संघार/विनाश के भगवान माने जाते हैं, भगवान शिव को लोग बहुधा कल्याणकारी भगवान भी मानते हैं और इसलिए उनकी व्यापक रूप से पूजा-अर्चना होती है। भगवान ब्रह्मा जी के कार्य से कोई मतभेद नहीं है उनकी पूजा-अर्चना अलग की जा सकती है जबकि विष्णु जी और शिव जी एक-दूसरे को पूजते आराधना करते दीखते हैं। ऐसा क्यों मेरी समझ से परे है। कहते हैं भगवान शिव राम जन्म और कृष्ण जन्म के अवसर पर उनके दर्शन के लिए धरती पर आये थे। जबकि श्री राम ने लंका पर चढ़ाई के समय शिव लिंग स्थापित कर समुद्र तट पर रामेश्वरम में भगवान शिव की पूजा की थी। दोनों भगवान के मध्य कितना सामंजस्य है मैं नहीं कह सकता? इस पक्ष पर अपनी अपनी अनुभूति से लोग निष्कर्ष निकालें।

अवतार की दृष्टि से भगवान ब्रह्मा का कोई अवतार ज्ञात नहीं है। वहीं भगवान विष्णु के कई अवतार यथा राम, कृष्ण, आदि दस अवतार बताये जाते हैं लेकिन ब्रह्मा जी का कोई अवतार मुझे ज्ञात नहीं है। वहीं भगवान शिव के रूद्र रूप में बाबा हनुमान जी जगत प्रसिद्ध हैं और सर्वत्र धर्म से परे व्यापक रूप से पूजे भी जाते हैं। उनकी एक अलग विशिष्टता है जिस पर अलग से बहुत कुछ कहा और लिखा जा सकता है। लेखक आशा करता है की उपरोक्त वर्णन पाठकों को रुचिकर लगेगा।

–प्रो. वीर बहादुर सिंह,
खाद्य विज्ञ, पूर्व कुलपति,
महाराना प्रतापकृषि एवं
प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय,
उदयपुर

मेघ मल्हार की तर्ज पर रंग मल्हार में छाई इन्द्र धनुष के रंगों की छटा

''अन्तर्राष्ट्रीय रंग मल्हार-2024'' का आयोजन, वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने स्वच्छता के प्रति एप्रोन पर इन्द्र धनुषी रंगों की छटा बिखेरी

भीलवाड़ा, (निसं)। स्थानीय आकृति कला संस्थान भीलवाड़ा, जिला प्रशासन भीलवाड़ा एवं एल.एन.जे. समूह के सहयोग से आयोजित ''अन्तर्राष्ट्रीय रंग मल्हार-2024'' का आयोजन रविवार को हुआ। स्थानीय ग्रामीण हाट की कला दीर्घा में शहर के 100 से अधिक वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने स्वच्छता के प्रति एप्रोन पर इन्द्र धनुषी रंगों की छटा बिखेरी।

जानकारी देते हुये संस्थान के सचिव कैलाश पालिया ने बताया कि शहर के 125 वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने अपनी-अपनी शैली में एप्रोन पर चित्रांकन कर भगवान इन्द्रदेव से मेघ मल्हार की तर्ज पर रंग मल्हार के माध्यम से पानी की कमी ना हो, शांति एवं सद्भाव बना रहे आदि की कामना की। प्रत्येक कलाकार ने एक से बढ़कर एक चित्रांकन किया, जिसमें भारत की लोक चित्र शैलियां, राजस्थानी संस्कृति, पर्यावरण, स्वच्छता आदि विषयों पर चित्रांकन किया। इस आयोजन में 90 वर्ष तक से लेकर सबसे कम 8 वर्ष की भूवी

'अन्तर्राष्ट्रीय रंग मल्हार-2024'' में शहर के वरिष्ठ, युवा एवं बाल कलाकारों ने भाग लिया।

केसवानी व लाईशा कोठारी ने भी एप्रोन पर चित्रांकन किया। यह आयोजन भीलवाड़ा के अलावा चित्तौड़गढ़, बीकानेर, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, अजमेर, नाथद्वारा, गुजरात, मध्यप्रदेश, मुम्बई, दिल्ली आदि शहरों के साथ-साथ 20 देशों के लगभग 4000 से अधिक कलाकार ऑनलाईन व ऑफ लाईन माध्यम से जुड़े। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी लक्ष्मीनारायण डाड, एल.एन.जे. ग्रुप के ओएसडी रंजनीश कुमार वर्मा, सुभाष नगर थाने के अतिरिक्त थानाधिकारी ओमप्रकाश, कत्थक नृत्यांगना रमा पचिसिया, डॉ. मनीष रंजन ने सभी कलाकारों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

- **चित्रांकन कर भगवान इन्द्रदेव से मेघ मल्हार की तर्ज पर रंग मल्हार के माध्यम से पानी की कमी ना हो, शांति एवं सद्भाव बना रहे आदि की कामना की**

इस आयोजन में मुख्य रूप से गोवर्धन सिंह पंवार, मंजू मिश्रा, सत्यनारायण सोनी, गोपालदास, बालकिशन जांगिड़, इकबाल हुसैन, ज्योति पारीक, दीपिका पाराशर, सीमा सांखल, माही मूंदड़ा, खुशी कोठारी, दृष्टि जैन, तृप्ती समतानी, मितिशा अग्रवाल, कोमल रानी, अन्नु प्रजापत, राजेश जोशी, सांची माहेश्वरी, अनुष्का पाराशर, आवृती जैन, उमंग उपाध्याय, आयुष राठौड़िया, रिया छापरवाल, अंकित बैरवा, बबलु रेगर, भूमि केशवानी, सिद्धी केशवानी, हर्ष सोनी, अनवेशा सोनी, हर्षिता शर्मा, लोकेश खटीक, शांतिलाल गाडरी, हितेन्द्र शर्मा, वेदिका शुक्ला, अक्षपरी चुण्डावत, नवीन कुमार माली, लोकेश खटीक, आर्विन जायसवाल सहित 125 कलाकारों ने भाग लिया।

ग्राम काशीपुरा में महिला मनरेगा श्रमिकों ने बदली तस्वीर

मसूदा, (निसं.)। मनरेगा योजना ने मसूदा उपखण्ड क्षेत्र की मनरेगा श्रमिक महिलाओं ने अपनी व परिवार की काया ही पटल कर रख दी। परिवार का खर्च व बच्चों की पढ़ाई आदि का बोझ खुद उठा रही मनरेगा श्रमिक महिलाओं ने बता दिया कि वह किसी क्षेत्र में कमजोर नहीं है।

मसूदा पंचायत समिति की ग्राम पंचायत देवपुरा का ग्राम काशीपुरा शहरी क्षेत्र से लगभग 25 किलोमीटर दूर पहाड़ियों में स्थित है जहां मजदूरी काम रोजगार का अभाव है। महात्मा गांधी महानरेगा योजना के अंतर्गत पिछले 5 सालों से ग्राम की मुखिया वार्डपंच सुरमा पत्नी गोपाल फौजी के कुशल नेतृत्व से हर वर्ष योजना के तहत 100 दिन का काम रोजगार मिल रहा है जिससे गांव की तस्वीर ही बदल गई है। गांव के कई परिवार रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन करने से रुक गए हैं। पिछले 5 सालों से गांव में ही योजना के तहत

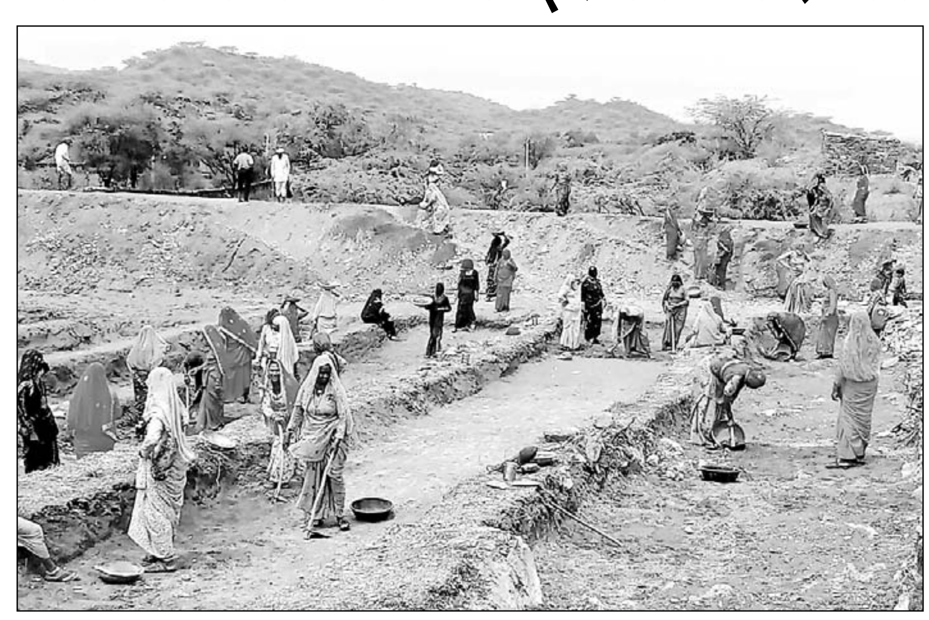

ग्राम काशीपुरा में मनरेगा योजना के अंतर्गत 5 साल से हर वर्ष 100 दिन का रोजगार मिल रहा है।

- **घर का खर्च उठाने, बच्चों की पढ़ाई के साथ बदला घर का माहौल**

पर्याप्त रोजगार काम मिल रहा है, जिससे अपना परिवार का खर्च पालन-पोषण करने में कोई परेशानी नहीं हो रही है।

हर वर्ष 100 दिन पूर्ण होने के साथ ही गांव में कई विकास कार्य हो रहे हैं मनरेगा श्रमिक शांति, बनी, शहनाज, संतोष, मदीना, केली, रुकमा जमना आफु, फेफी, कोया, मंजू सीता, वार्ड पंच सुरमा का इनका कहना है कि पिछले 5 सालों से हर साल 100 दिन का रोजगार मिल रहा है जिससे हमें परिवार चलाने में कोई परेशानी नहीं हो रही है। गांव में ही पर्याप्त रोजगार मिलने पर सभी नरेगा श्रमिकों ने वार्ड पंच सुरमा पत्नी गोपाल फौजी व सरपंच शमीम हैदर को धन्यवाद दिया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 8 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र प्रातः 6:03 तक, वज्र योग रात्रि 2:06 तक, तैतिल करण सांय 5:34 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः 6:03 तक है। आज से मुहर्रम मु. मास है। हिजरी सन् 1446 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:25 तक, शुभ 9:07 से 10:49 तक, चर 2:14 से 3:56 तक, लाभ-अमृत 3:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। चलते व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है और अतिरिक्त कार्य की जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।